

DATE

NOTES

जिन मंदिर शिक्षालय नहीं शिक्षालय हैं।

पात्र :- (i) विद्यार्थी,

(iv) बेरोजगार,

(ii) व्यापारी,

(v) रिश्तेदार,

(iii) युवा,

(vi) नायक।

1. विद्यार्थी :-

O' my God! good morning

हे प्रभु! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।

मुझको कुछ आता नहीं, फिर भी पास कीजिए।

हे भगवान! देखो, आपको पता ही है

कि मैं किकेर का फैन हूँ और अभी भारत-

पाकिस्तान का झुलसा चल रही है, तो समझलो

कि भारत की इज्जत दांव पर लगी है। अतः

मैच देखना बहुत ही जरूरी है और आपको

तो पता ही है कि बीई की परीक्षा सिर पर

है। पढ़ाई तो हो नहीं पा रही है। पढ़ाई करूँ कि

मैच देखूँ। तो हे भगवान! समझाल लेना। मेरी

इज्जत आपके ही हाथों में है। मैं अपनी पॉकेट

मनी में से १५ रु. दानपात्र में जरूर डालूंगा।

याद रहे भगवान! श्रद्धा मत जाना।

Goodbye!

DATE

NOTES

२. व्यापारी:— अति पुण्य उदपमम् आया।
सौ-सौ की गड़ड़ी पाया।
चतुरि मंगलं, सोना मंगलं, चांदी मंगलं।
रूपया मंगलं, ड्राफ्ट मंगलं।

हे भगवान! आप नाराज क्यों हो

गये हैं। इस बार बिल्कुल भी सीजन नहीं चल रहा है। अरे! आपको चाँवल चढ़ा सब्जें इतनी भी कमाई नहीं हो पा रही हैं। अरे! जब आप हमें खाना-खाने को नहीं मिलेगा तो हम आपको क्या चढ़ावे? भगवान जरा दया करो। आप दया निधान हो। हमारी दुकान अच्छी चलने लग जावे और अपने मजे हो जावे। भगवान अपनी यह बात पक्की रही कि अपने मजे तो आपके मजे। रुक जोरदार विधान करा दुंगा। जब तो अन्तीक्ष पार्श्वनाथ हम तुम्हारे ही भरोसे हैं।

३. रिश्वतखोर:—

हे भगवान! आप तो सर्वज्ञ हैं। मैंने जो अजीब लगाई है। आप तो समझ ही गये होंगे। समझे न हो तो भगवान मैं फिर से बता रहा हूँ कि मैं तो रिश्वतखोरी के चक्कर में पकड़ा गया हूँ। लोगों ने कह दिया है कि मैंने एक लाख रुपये की रिश्वत ली है मगर

DATE

NOTES

राज की बात बताऊँ भगवान की तो दोषदा की है। पर आप ही इस झंझट/मुर्गीबन से छुड़ा सकते हो। अगर मैं कोई भी बायजमत बरी हो गया तो 10% आपको दूँगा व 33% सब ही चढ़ाऊँगी भी।

४. बेरोजगार:— इधर-उधर देखते हुये....

वाह-भगवान वाह! आपके मंदिर में फर्श मार्बल का, दीवारों पर ऑयलपेंट, बेदी पर सोवे कार्पेट हस्त चंवरदि चांदी के क्या कहना भगवान...? अपरिग्रही भगवान के पास ज्ञाना परिमल और एक मैं आपका भक्त बेरोजगार घूम रहा हूँ। किसी से मत कहना भगवान ये देख भी मैं दूसरों की पहन रखी हूँ। अरे भगवान! कुछ तो सोचो हमारे बारे में, हम जैसे बेरोजगारों पर कृपा करो। बस एक छोटी-सी नौकरी दिला दो भगवान! पहली वेतन आपको ही चढ़ाऊँगा। ज्यादा क्या कहूँ भगवान और तो आप स्वस्थ ही गये होंगे।

५. युवा:

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी करण।
पास प्यारा, तुम ले करण को ब्याह हमारा।
हे पारसनाथ भगवान! मैं कब ले

DATE

NOTES

शिवरात्रि का व्रत कर रहा हूँ। पर आप ही कि सुनते ही नहीं हो। अरे! मैं एक शादी ही तो कर रहा हूँ। भगवान आपकी ही कृपा से चरुबर्तियों की तो 96-96 हजार शादियाँ हो गईं मेरी एक भी एक नहीं करवा सकते? अरे! मैं पता है आपकी शादी नहीं हुई तो क्या हुआ? भक्तों पर दया तो करनी चाहिये। हे चिन्तामणि पार्श्वनाथ! दया करो। किसी कन्या को मेरे ऊपर प्रसन्न करवा दो।

6. श्रायक:- अभी आपने देखा कि कितने भक्त आये और वीतरागी भगवान से अपने-अपने राग की बातें कहकर चले गये। ये तो गँव-गँव, घर-घर की कहानी है। दर्शन करने आते हैं जैन कहलाते हैं। भगवान के नाम पर से और जैन से किराना भण्डार, वर्तन भण्डार, वस्त्र भण्डार चलाते हैं। पर देवदर्शन की विधि क्या है यहाँ भी लोक देग से नहीं जानते हैं।

कोई एक:- तो आप ही बता दो देवदर्शन की विधि क्या है?

श्रायक:- देवदर्शन की विधि बतायेगा।

DATE

NOTES

कोई एक:- स्वाध्याय करने से क्या लाभ है?

श्रायक:- स्वाध्याय करने से हितहित, मर्यादा, पूज्यापूज्य का ज्ञान होता है। पर द्रव्य व दान तत्त्व का ज्ञान पूर्वक भेदज्ञान से सत्यदर्शन प्राप्त होता है।

सभी एक साथ:- भैया आपने तो हमारी आंखें खोल दी।

श्रायक:- भैया आप सब लोग भी मांग लेकर भगवान के पास आते हैं लेकिन भगवान न लेते हैं और न देते हैं। हम जैन हैं हमें जैन का अच्छा स्वरूप नहीं मालूम, जिनवाणी मिली, उत्तम कुल मिला फिर भी धर्म से वंचित हो रहे हैं। हमसे अभावा कौन है? अर्थात् कोई नहीं।

यहमानुष पर्याय :- - - -

जय जिनेन्द्र

DATE

मैद विज्ञान

पं. राज कुमार जी शास्त्री

NOTES

पात्र परिचयधनिया - धोबीअगम - शान्त प्रकृति का सुबकअनेश - पण्डित जीदिव्यांश - किंचित उद्दण्ड प्रकृति वाला सुबकचिन्मय - विद्वान् मित्र

(धोबी बी डकान - धनिया गुनगुना रहा है)

धनिया - धनिया धोबी मेरा नाम,

कपड़े धोना मेरा काम।

मैं को भगाऊँ, दाग को मिटाऊँ, कपड़ों को चमकाऊँ
तो... धनिया धोबी...

(प्रेस करते हुये) — ये सेठ लोग किन्ने

गंदे कपड़े कर लेते हैं। इन्हें धोते-धोते मेरे

पापु ही अम्मा आधी धिस गई हैं।

दिव्यांश (आते हुए) अरे भइया धनिया।धनिया - कहिए भाई साहब क्या सोना कहेंगेदिव्यांश - अरे भाई, मैं परसों एक चादर धोने को दे गया

था। वह तैयार कर दिया क्या?

धनिया - अरे बिल्कुल तैयार है साब, एकदम

सकासक यह रही।

दिव्यांश - ठीक है बाबू इधर, पैसे बाद में पहुँचाऊंगा।धनिया - कोई बात नहीं भाई साहब पैसे तो आते रहेंगे।

(दिव्यांश चादर लेकर एक तरफ लौ जाता है)

DATE

NOTES

धनिया - (प्रेस कर रहा है एवं गुनगुना रहा है।)

धनिया धोबी मेरा नाम,

कपड़े धोना मेरा काम।

मैं को भगाऊँ... (प्रेस-जीत लेता)

(अगम को आता देखकर)

धनिया - जय जिनेन्द्र अगम भाई साहब। आप तो बहुत

दिनों बाद नजर आ रहे हैं कहीं बाहर गए क्या?

अगम - हाँ भाई धनीराम! बाहर ही गया था और आज

फिर जयपुर जाना है। धनीराम मैं एक चादर गन्ना

गया था, वह तैयार कर दिया।

धनिया - भाई साहब, धनिया समय का पखंड है। भाई

चादर तो कब ले तैयार है, यह लीजिए। (चादर

उठाकर देता है।)

अगम - (अच्छी तरह चादर देखते हुए।)

अरे धनीराम! यह चादर मेरा नहीं है। इसका

दिखाओ यहाँ और किसी का होगा।

धनिया - अरे बाप रे मूल हो गई, अभी-अभी दिवांस

भाई साहब एक चादर ले गए हैं उनका भी किन्तु

देखा ही था। कल मैं चादर बदल कर दे रहा था।

अगम - अरे नहीं भइया, मुझे तो अभी रात को नजर

जाना है। मुझे चादर बहुत जरूरी है।

धनिया - तो भाई साहब आप ही जरा तबड़ीक कर

उनके वहाँ से नहलते इस चने जाना।

अगम - हाँ यह ठीक है।

DATE

NOTES

दिव्यांस के घर जाकर)

अरे कोई है..... दिव्यांस ओ दिव्यांस...
(कोई आवाज नहीं आती तो अंदर जाता है)

अच्छा तो भाई साहब चादर तानकर सो रहे हैं। दिव्यांस ओ दिव्यांस। (चादर खींचता है)

दिव्यांस (गुस्से में, आंखें मलते हुए)

कौन बेवकूफ मेरी नींद खराब कर रहा है?

अगम - अरे भइया नाराज मत होओ, मैं तो अपनी चादर लेने आया हूँ।

दिव्यांस - दिमाग तो खराब नहीं हो गया। एक तो मेरी नींद खराब कर दी आकर, आ हा... क्या गजा आ रहा था। दूसरे कह रहे हो कि अपनी चादर लेने आया हूँ यह कोई कपड़े की या बोखी की दुकान है क्या?

अगम - अरे नहीं भइया, ये जो चादर तुमने जोड़ी है, वो मेरी चादर मेरी है।

दिव्यांस - लो कर लो बात। अब साहब मेरी चादर को अपनी बताने लगे, हद हो गई, फिर कहा कि घर भी मेरा है। अरे भइया, ये चादर तो मैमजी धनिया के यहाँ से धुनाकर लाया हूँ।

अगम - देखो धनिया ने ही कहा है कि मेरा चादर तुम्हारे पास है।

दिव्यांस - देखो एक बार मैं ही समझलो कि यह चादर मेरा है।

48

DATE

NOTES

अगम - तुम भी अच्छी तरह समझलो कि यह चादर मेरा है। (चादर खींचता है)

दिव्यांस - नहीं मेरा है। देखो लड़ाई हो जायेगी मैं क्या हूँ चादर मेरा है। (आपस में चादर खींचते हैं)
(इतने में चिन्मय व ज्ञानेश का प्रवेश)

चिन्मय - अरे यह क्या महाभारत मचा रखी है।

अगम - देखो भाई साहब यह मेरा चादर नहीं दे रहा है।

दिव्यांस - बड़ा अंधीर है भाई मेरे घर पर आकर मुझे ही चोर बना रहा है। गुस्सा तो ऐसा आ रहा कि सिर फोड़ कर रख दूँ।

चिन्मय - नुप रहे फालतू की बातें मत करो। अच्छा अगम ये बताओ कि तुम्हारी चादर यहाँ कैसे आई?

अगम - मैंने अपनी चादर धनिया के यहाँ धुलने डाली थी। मैं वहाँ चादर लेने गया तो मेरा चादर गलती से उनके यहाँ आ गया।

दिव्यांस - अच्छा तो तुम्हारी चादर की कोई पहचान है।

अगम - हाँ यह देखो चादर पर मेरा नाम लिखा है।
(सभी चादर देखते हैं)

चिन्मय - अरे! इस पर तो अगम का संटी लिखा हुआ है।

दिव्यांस - यह तो सच में बसका ही है, तो फिर मेरा चादर कहाँ है?

किताब

DATE

NOTES

अगम- तुम्हारा चादर यह रहा। तुम तो मेरी बात सुन ही नहीं रहे थे। मैं तुम्हारा चादर धनिया के यहाँ से लेकर आया हूँ।

दिव्यांस- मुझसे बड़ी भूल हो गई। मैं आपकी चादर को अपनी मानकर व्यर्थ ही इगड़ा कर रहा था। आप कृपया मुझे क्षमा कर दें।

चिन्मय- ओरे भाइयो! ऐसी ही भूल हम सब अनादि से कर रहे हैं। पर पदार्थों को अपना मान-मान कर।

अगम- क्या बात कर रहे हो मैं तो किसी की चीज को हाथ भी नहीं लगाता।

चिन्मय- भइया अगम, यह बात इतनी जल्दी समझ में नहीं आ जायगी। इसे तो गंभीरता से समझना पड़ेगा।

चिन्मय- देखो छोरे साथ यह जो अतिथि भर्क साहब आये हुए हैं इनका नाम ज्ञानेश कुमार है, यह धुवधाम से आये हैं, इस संबंध में ये ही हमें समझायेगे।

ज्ञानेश- जय जिनैन्द्र! मैंने आपकी सभी बातें सुनी हैं जिस तरह दिव्यांस आपकी चादर को अपनी मानकर सो रहा था, उसी तरह हम सब भी दूसरी वस्तुओं को अपना मानकर सो रहे हैं।

दिव्यांस- क्या बात कर रहे हो भर्क साहब, सो तो मैं पटले रहा था, अभी तो मैं जाग रहा हूँ।

45

DATE

NOTES

ज्ञानेश- नहीं भइया! अभी तो आपकी दृश्य निद्रा दृष्टि है भाव निद्रा जिसे मोह नींद कहते हैं वह नहीं दृष्टि।

अगम- इस मोह नींद से क्या होता है?

ज्ञानेश- जैसे दिव्यांस दृश्य निद्रा में तुम्हारे चादर को अपनी मानकर सो रहा था। वैसे ही हम सब मोह नींद में शरीर, धन, पुत्रादि, पर पदार्थों को अपना मानकर सो रहे हैं।

चिन्मय- यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आई, जो अच्छी तरह समझाओ न।

ज्ञानेश- अच्छा सुनो! आप सब अपना नाम तो जन्ते ही लेते।

दिव्यांस- हां-हां क्यों नहीं, मेरा नाम दिव्यांस है।

ज्ञानेश- और तुम्हारा?

अगम- मेरा नाम अगम है।

ज्ञानेश- ये तो आपने इस शरीर के नाम बताए हैं, आप अपना नाम बताइए न।

दिव्यांस- ली कर लो बात। क्या मैं और मेरा गरीर अलग-अलग थोड़े ही हैं। हम दोनों एक ही तो हैं।

ज्ञानेश- नहीं भइया, यही तो हमारी भूल है जो अनादिकाल से चली आ रही है और इस भूल के कारण ही हमें एक तिर्यंच आदि गतियों के डुब उठना पड़ रहे हैं।

दिव्यांस- ये बात तो समझ में नहीं आई। डीक है चादर मैं तो आपने बिन्ड दिखाकर समझा दिया कि वह चादर मेरा नहीं है। पर गरीर तो मैं ही हूँ। इस पर तो मेरा ही अधिकार है।

ज्ञानेश - देखो समझने से समझ में आता है समझने से नहीं। आप समझने की कोशिश करोगे तो जरूर समझ में आयेगा। अच्छा यह बताओ कि जीव किसे कहते हैं?

अग्राम - ऊँचे जो जानता-देखता और सुख-दुख का अनुभव करता है वही तो जीव है।

ज्ञानेश - और पुद्गल?

चिन्मय - जिसमें स्पर्श, रस, गंध और बर्ण पाया जाए उसे पुद्गल कहते हैं।

ज्ञानेश - बहुत बढ़िया, आप सबको तो सब याद है। अच्छा दिव्यांस तुम बताओ; तुम्हारा रंग कैसा है?

दिव्यांस - मेरा रंग गोरा है।

ज्ञानेश - और वजन कितना है?

दिव्यांस - 45 किलो।

ज्ञानेश - सब बताओ कि गोरा, काला रंग, हल्का भरी वजन, सुगंध - दुर्गंध यह सब किसमें पाये जाते हैं?

दिव्यांस - हमी-अमी तो चिन्मय ने बताया था कि स्पर्श, रस - गंध ये सब पुद्गल में पाए जाते हैं उसे बताना भी याद नहीं रहता क्या?

ज्ञानेश - तो फिर यह कैसे मूल रहे हो कि गोरा रंग और 45 किलो का वजन पुद्गल का है, जीव का नहीं।

चिन्मय - अरे हाँ यार! ये बात तो सच्ची है कि यह सब तो पुद्गल है पुद्गल का है। तो फिर मैं कौन हूँ?

ज्ञानेश - जैसे शरीर की अपनी पहचान है वही तरह जीव की भी अपनी पहचान है वो है जानता-देखता हम सब जानते देखते हैं इसलिए हम जीव हैं शरीर नहीं।

दिव्यांस - क्या बात है ज्ञानेश भाई साहब। आपने तो सच्ची में हमें जगा दिया। हम तो अभी तक शरीर और जीव दोनों के गुणों को अपना ही मान कर सो रहे थे।

ज्ञानेश - शरीर, धन-परिवार को तो छोड़ें हमारे भीतर जो राग-द्वेष-गुस्सा के भाव होते हैं वो भी जीव नहीं है जीव का स्वभाव नहीं है।

चिन्मय - पर उन सब भावों को तो हम ही कर रहे हैं।

ज्ञानेश - प्रेम का भाव हो या क्रोध का या मान का लोभ का या दया दान का यह सब जैसा संयोग होता है वैसे होते हैं और हमारी बलानता से होते हैं। अतः शरीर आदि पर पदार्थों के कारण होने वाले होने से और दुख के कारण होने से वह भी जीव नहीं है।

चिन्मय - पर भाई साहब पुण्य भाव तो मुनिराज ने भी बते हैं।

ज्ञानेश - मुनिराज के पुण्य भाव होता जरूर है पर उसे वह अपना नहीं मानते उन भावों पर भावों पर रहते नहीं हैं। वह उसे अपना द्वेष मानकर आत्मा में ही लीन होते हैं।

अग्राम - आज तो आपने भेदज्ञान का बड़ा ही सुन्दर स्वरूप समझाया है। पर यह भेदज्ञान होगा कैसे?

DATE

NOTES

ज्ञानेश जब हम प्रतिदिन स्वाध्याय करेंगे, चिंतन करेंगे, मनन करेंगे, तत्व का अभ्यास करेंगे तो यह मेड़झान अकसर एवं जल्दी ही होगा।

दिव्यांस क्यों अगम भैया कुछ समय में आया अब तो आप चिन्मय के साथ रोजाना स्वाध्याय में जाना।

अगम मैं तो जाऊंगा ही और तुझे भी साथ ले चलूंगा।

दिव्यांस क्यों नहीं मैं भी जरूर चलूंगा।

ज्ञानेश ये दुई न कोई बात। आओ हम सब भेदज्ञान प्राप्त करके मोक्षमहल में चले। बीच में पुण्य-पाप के भाव आवें तो उन्हें अपने ज्ञानभाव से नष्ट कर मुक्ति मार्ग में बड़े चलेंगे।

धनिया (दौड़कर आते हुए) अरे भाइयो! हमें यहीं संसार में ही छोड़ दोगे क्या? हमें भी तो साथ ले चलो।

ज्ञानेश अरे भइया! जिनवाणी तो हम सबको मुक्तिमार्ग में चलने का आमन्त्रण देती है।

चलो हम सब चले (सब मिलकर गाते हैं)

मुक्तिमार्ग प्राप्त कर बड़े चलो बड़े चलो।

शुको न एक क्षण कभी बड़े चलो बड़े चलो।

ये विकार मार्ग में बहल-बदल कर आयेगे।

भेष पुण्य का बना, तुझे सदा दिखायेगे।

शत्रु जानकर इन्हें दले चलो दले चलो।

मुक्तिमार्ग प्राप्त कर बड़े चलो बड़े चलो ॥

महावीर भगवान की जय हो।

क१

नोट:- जीव है सो मैं ही हूँ।

DATE

NOTES

मित्र एक लेखिका :- ब्र. ग. अरती जैन

पात्र :- दस विद्वान

पहला मित्र :- चलो भाई! कहीं तीर्थ वंदना को चलते हैं।

दूसरा मित्र :- हाँ भाई! विचार तो बहुत अच्छा है, चलो चलते हैं।

तीसरा मित्र - पर मित्र! ये तो बताओ कौन-से तीर्थ चलने का विचार है?

चौथा मित्र - मेरा तो विचार है कि पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन करने बनारस नगरी चलते हैं।

ई सभी मित्र एक साथ - हाँ - हाँ बनारस नगरी ही चलते हैं।

पाँचवा मित्र - (दुलवे मित्र से) - चेतन! रोसा करना तुम आज ही नाव वाले से बात कर लेना, राति - ०४ बजे हम सब निकल जायेंगे।

दुलवा मित्र - ठीक है मित्र! मैं नाव वाले से बात कर लूँगा।

सातवा मित्र - तो मित्रों आज शाम हम सभी गंगा के घाट पर मिलते हैं - जयसिन्हा

(प्रत्युत्तर - समवेत स्वर में जयसिन्हा)

(सभी शत्रु चक्कर लगाकर)

(सभी मित्र नाव में एक के पीछे एक बैठे)

DATE

NOTES

51

DATE

NOTES

जायेंगे, चार मित्रों के हाथ में बाँट रहेगा,
जिसे वे एक्टिंग कर चलायेंगे।)
यात्रा प्रारंभ करते समय - बोलो
पार्श्वनाथ भगवान की जय।
आठवाँ मित्र - मित्रों! बनारस पहुँचने में बहुत
समय लगेगा ऐसा करते हैं - समय
बिताने के लिए कुछ करते हैं।
नौवाँ मित्र - ठीक है भाई! अन्ताक्षरी खेलते हैं।
दसवाँ मित्र - शुरू करो अन्ताक्षरी लेकर मधुकानाम
समय बिताने के लिए करता है कुछ काम। - मैं
से बोलो।
पहला मित्र - मीठे रस से भरी जिनवाणी लागे,
जिनवाणी लागे। मने आत्मा की बात
घणी ध्यानी लागे।।
दूसरा मित्र - गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैयागा।
प्रभु शुण गा तू समय न गवा।।
तीसरा मित्र - बनारस वाले - पार्श्वनाथ हमारे
बनारस वाले।
वामादेवी घर जन्म लियो हैं, माता की
कोख को धन्य कियो हैं।
अश्वसेन की आँखों के तारे -
पार्श्वनाथ हमारे, बनारस वाले...
चौथा मित्र - बाजे कुण्डलपुर में बंधाई की नगरी
में वीर जन्मे - 2 महावीर जी

पाँचवाँ मित्र - जीयरा हो हो जीयरा - 2
जीराज उड़ के आओ सम्मेलन शिखर
भाव सहित वंदन करो पार्श्वनाथ में।
जीयरा हो हो जीयरा -
छहवाँ मित्र - रंगमा - रंगमा - रंगमा रे।
प्रभु तारा दी रंग मा रंग गयो रे।।
सातवाँ मित्र - रोम - रोम से निकले प्रभुवर
नाम तुम्हारा हा नाम तुम्हारा।।
आठवाँ मित्र - रोम - रोम पुलकित हो जाये।
जब जिनवर के दर्शन पाये।।
नौवाँ मित्र - ये धर्म हैं आत्मज्ञानी का,
सीमंधर महावीर स्वामी का,
इस धर्म का भैया नया कहना,
ये धर्म हैं वीरों का गढ़ना
जय हो -
दसवाँ मित्र - होली खेली मुनिराज, शिखरवन में,
रे अकेले वन में, मधुवन में...
पहला मित्र - (इशारा करते हुए) - अरे, अरे!
मित्रों! देखो बनारस नगरी आ गई।
बोलो - पार्श्वनाथ भगवान की जय।
(नाव से उतर कर खड़े हो जाते हैं।)
दूसरा मित्र - देखो मित्रों! नगरी में जाने से पहले
एक बार गिनती कर लें, पूरे हैं कि नहीं।
तीसरा मित्र - चलो मैं गिनता हूँ... (गिनता)

-कर्म भाष्य-

रक-दो - लीन - नौ - ।

अरे! अरे! रे ये क्या हुआ, जब हम गांव से निकले थे तो पूरे दस थे, लेकिन अब नौ ही बचे - - - ।

चौथा मित्र - अरे भाई! तुमने अच्छे से नहीं गिना, मैं गिनता हूँ - - -

रक-दो - - - नौ, अरे नौ ही हैं - - -

पांचवा मित्र - अरे, अरे! लगता है तुम दोनों की ही गिनना नहीं आता - मैं अंग्रेजी में गिनता हूँ, वन - टू - - - नाइन अरे क्या बात है, नाइन ही है।

छठा मित्र - अरे लगता है, वास्ते में अपना रक मित्र डूब गया। - - - उं उं उं - (सब मित्र रोने लगते हैं।)

(तभी वहां से रक पंडितजी निकलते हैं।)

पंडितजी - क्यों भाई, क्या बात है? तुम सब रो क्यों रहे हो?

सातवां मित्र - क्या बताये! हमारा रक मित्र गंगा में डूब गया।

पंडितजी - क्या - - - गंगा में डूब गया, कब डूबा?

आठवा मित्र - ये तो हमें नहीं मालूम लेकिन हम अपने गांव से दस मित्र आये थे, अब नौ ही बचे।

पंडितजी - अच्छा - अच्छा मैं समझ गया, चलो कोई बात नहीं मैं गिनता हूँ। देखो रक-दो - - - दस। देखो तुम लोग तो पूरे दस हो। तुम दूसरों को तो गिन रहे थे, लेकिन स्वयं को गिनना भूल जा रहे थे, इसलिए दुखी हो रहे थे।

सिद्धान्त - इसी प्रकार यह जीव, जीव को जानने के नाम पर जीव इत्य, जीव तत्त्व, जीव पदार्थ, जीवास्तिकाय आदि सभी को जानता है। जीव के सभी भेद संसारी - मुक्त, त्रैलोक्य - स्थावर, गुरुस्थान, मार्गस्थान, जीवसमास, सभी कुछ सीखा लेता है, जीव की परिभाषा भी रह लेता है, लेकिन वह ज्ञान-दर्शन को धारण करती हुई वस्तु में स्वयं हैं, जीव है सो मैं ही हूँ, ऐसी प्रतीति नहीं करता, ऐसा भाव भासन नहीं करता, इसलिए संसार में परिभ्रमण कर दुखी होता है यदि स्वयं की जगह ले तो, परम सुखी हो जावे।